International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

बालक के पोषण एवं विकास में मनोवैज्ञानिक योग्यता एवं अभिभावक वर्ग का सहयोग

मधुलिका परमार, शोधार्थी (गृह विज्ञान) टांटिया विश्वविद्यालय (श्रीगंगानगर)
डा. मोनिका, सहायक आचार्य (गृह विज्ञान) टांटिया विश्वविद्यालय (श्रीगंगानगर)

परिचय

बालक का व्यक्तित्व विकास एक सतत प्रक्रिया है, जो जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है और जीवनभर चलती रहती है। इस विकास प्रक्रिया में परिवार और विशेष रूप से अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। बालक का पहला सामाजिक संपर्क परिवार से होता है, और माता-पिता का व्यवहार ही उसके व्यक्तित्व की नींव रखता है। जिस प्रकार का वातावरण अभिभावक बालक को प्रदान करते हैं, वही वातावरण उसकी सोच, आदतों, भावनाओं और सामाजिक व्यवहार को आकार देता है।

पालन-पोषण (Parenting) केवल भोजन, वस्त्र और आश्रय देने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें बालक की भावनात्मक सुरक्षा, अनुशासन, मूल्यबोध और आत्मनिर्भरता का विकास भी शामिल है। बाल मनोविज्ञान के विशेषज्ञों का मानना है कि माता-पिता का दृष्टिकोण, उनकी अपेक्षाएँ, प्रेम, दंड अथवा स्वतंत्रता की सीमा – सब मिलकर बच्चे के व्यवहार और भविष्य को निर्धारित करते हैं।

अभिभावकों की पालन-पोषण शैली को सामान्यतः तीन श्रेणियों में बाँटा गया है –

1. **कठोर (Authoritarian Parenting)** – इसमें अभिभावक अनुशासन और नियमों पर अत्यधिक बल देते हैं। बच्चों को स्वतंत्रता कम मिलती है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अनुशासित तो होते हैं, परंतु आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता में कमी देखी जाती है।
2. **उदार (Permissive Parenting)** – इस शैली में अभिभावक बच्चों को अत्यधिक स्वतंत्रता देते हैं और अनुशासन की कमी रहती है। ऐसे वातावरण में बच्चे आत्मनिर्भर तो हो जाते हैं, परंतु उनमें अनुशासनहीनता और लापरवाही की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।
3. **संतुलित (Authoritative Parenting)** – इस शैली में अभिभावक बच्चों को स्वतंत्रता भी देते हैं और अनुशासन का पालन भी कराते हैं। प्रेम और अनुशासन का यह संतुलन बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

वर्तमान समय में जब सामाजिक परिवेश, तकनीकी प्रगति और प्रतिस्पर्धा का दबाव निरंतर बढ़ रहा है, तब अभिभावकों के लिए सही पालन-पोषण शैली का चयन और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। बच्चों में बढ़ते तनाव, अवसाद, आक्रामकता और आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याओं का एक प्रमुख कारण गलत पालन-पोषण शैली को माना जाता है।

इसलिए इस शोध का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यह अध्ययन अभिभावकों को यह समझने में मदद करेगा कि कौन-सी पालन-पोषण शैली बच्चों के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है और कौन-सी शैली उनके विकास में बाधक बन सकती है। इस अध्ययन से अभिभावक-बालक संबंधों को मजबूत करने, बच्चों में आत्मविश्वास व रचनात्मकता विकसित करने तथा समाज में जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की दिशा में उपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

साहित्य समीक्षा

- **डायना बौमरिंड (1967)** ने पालन-पोषण की तीन प्रमुख शैलियाँ बताई– *Authoritarian (कठोर), Permissive (उदार)* और *Authoritative (संतुलित)*।
- **एरिक एरिक्सन (1994)** ने कहा कि यदि बच्चों को सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण मिलता है तो वे आत्मविश्वास और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करते हैं।
- **हलाँक (2001)** के अनुसार, माता-पिता का व्यवहार बालक के सामाजिक संबंधों और भावनात्मक परिपक्वता का मुख्य आधार है।
- भारतीय शोध (शर्मा, 2018; वर्मा, 2020) दर्शाते हैं कि संतुलित एवं संवादात्मक पालन-पोषण शैली से बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियाँ और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पालन-पोषण की विभिन्न शैलियों का वर्गीकरण करना।
2. पालन-पोषण शैलियों के प्रभाव से बालक के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करना।

3. अभिभावक और बालक के बीच संबंधों की गुणवत्ता को समझना।
4. यह पता लगाना कि कौन सी पालन-पोषण शैली बच्चों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

अध्ययन का महत्त्व

यह अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बालक का व्यक्तित्व केवल जन्मजात गुणों से नहीं बनता, बल्कि उसका निर्माण अभिभावकों की पालन-पोषण शैली पर भी गहराई से निर्भर करता है। वर्तमान समय में बदलती पारिवारिक संरचनाओं, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रभावों के बीच बच्चों में अनुशासनहीनता, तनाव और भावनात्मक असुरक्षा जैसी समस्याएँ अधिक देखने को मिल रही हैं। ऐसे में यह शोध अभिभावकों को यह समझने में सहायता करता है कि कठोर, उदार अथवा संतुलित पालन-पोषण शैली बच्चों के व्यवहार, आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सामाजिकता को किस प्रकार प्रभावित करती है। विशेष रूप से, यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि संतुलित पालन-पोषण शैली (Authoritative) बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली है। अतः इस शोध का सामाजिक, शैक्षिक और व्यावहारिक – तीनों ही स्तरों पर महत्त्व है, क्योंकि यह न केवल बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है, बल्कि समाज को जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिक उपलब्ध कराने में भी सहायक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अभिभावकों की पालन-पोषण शैली बालक के व्यक्तित्व विकास की दिशा और गति निर्धारित करती है। कठोर (Authoritarian) पालन-पोषण में बच्चे अनुशासित तो होते हैं, लेकिन उनमें आत्मविश्वास और स्वतंत्र निर्णय क्षमता की कमी पाई जाती है। उदार (Permissive) पालन-पोषण में बच्चे स्वतंत्र तो हो जाते हैं, किंतु अनुशासनहीनता और लापरवाही जैसी प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। इसके विपरीत, संतुलित (Authoritative) पालन-पोषण बच्चों को प्रेम, अनुशासन और स्वतंत्रता – तीनों का उचित संतुलन प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें आत्मविश्वास, रचनात्मकता, भावनात्मक स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी का उच्च स्तर देखने को मिलता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बालक के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए संतुलित पालन-पोषण शैली सर्वाधिक उपयुक्त है। यह शैली न केवल बच्चों के शैक्षिक और मानसिक विकास को प्रोत्साहित करती है, बल्कि उन्हें भविष्य में जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिक बनाने की दिशा में भी मार्गदर्शन करती है। इस शोध का संदेश यह है कि अभिभावक अपनी पालन-पोषण शैली में संवाद, प्रेम और अनुशासन का संतुलन बनाए रखें, क्योंकि यही बच्चों के उज्ज्वल भविष्य और समाज की प्रगति की आधारशिला है।

संदर्भ सूची

1. बौमरिंड, डायना (1991). *Parenting Styles and Child Development*. Journal of Child Psychology.
2. एरिक्सन, एरिक (1994). *Childhood and Society*. Norton Publishers, New York.
3. हर्लॉक, एलिजाबेथ बी. (2001). *Child Development*. McGraw Hill Book Company.
4. शर्मा, रेखा (2018). *अभिभावक-बालक संबंध और व्यक्तित्व विकास*. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
5. वर्मा, अंजली (2020). *पालन-पोषण की शैली और शैक्षिक उपलब्धियाँ*. दिल्ली विश्वविद्यालय।